SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

इतिहास लेखन में सिक्कों की भूमिका :एक विश्लेषण

बृजेश तिवारी

सहायक प्राध्यांपक, इतिहास विभाग

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

इतिहास लेखन में प्रमाण की आवश्यकता होती है और वह प्रमाण साहित्य और पुरातत्व के समान उद्घोष ही प्रदान करते हैं, जिसमें ऐसे पुरावशेष/पुरातत्व जो किसी एक दृष्टिकोण के अलावा विभिन्न दृष्टिकोण समाहित किए होते हैं। उन पुरातत्व में सिक्के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। अर्थात सिक्के ऐसे पुरातात्विक स्रोत है जिनसे इतिहास लेखन के कई पहलुओं का सूक्ष्मावलोकन किया जा सकता है जैसे सिक्कों की बनावट, आकृति, आकर, धातु के प्रकार, उन पर अंकित भाषा एवं संकेत इत्यादि। सभी उस काल के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ राजा की नीतियों को समझने एवं तार्किक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद प्रदान करते हैं। प्राचीन काल से आधुनिक भारत के इतिहास में किसी राज्य/ राष्ट्र की स्थिति का मूल्यांकन मुद्रा के मूल्य से ही किया जाता है। अतः इतिहास के निर्माण में सिक्कों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

शब्द बीज

पूरावशेष, साहित्य, पुरातात्विक दृष्टिकोण, सर्व सुलभ, राज्य आलेखन, पुनः मुद्रण, अभिलेखागार, राष्ट्रवादी इतिहास लेखन।

शोध का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य सिक्कों की भूमिका को रूप लक्षित करने के साथ-साथ उन पहलुओं को भी रुपायित करने का प्रयास करना जिसको लेकर साम्राज्यवादी इतिहासकारों में बड़ा द्वद्ध रहा

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

है, जैसे सिक्कों की प्राप्ति को उनके विस्तार का प्रमाण मान लेना, कुछ सिक्कों के ऊपर छपी आकृतियों से राजा की विचारधारा को समझना इत्यादि।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में द्वितीय स्रोतों के समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण के साथ-साथ अन्य तात्कालिक साक्ष्यों का उपयोग किया गया है, जो सिक्कों की प्रमाणिकता में सहयोगी रहे हैं।

शोध विस्तार

इतिहास लेखन में पुरातत्व किसी घटना की प्रामाणिकता के लिए एक महत्वपूर्ण अभिकारक होता है, चूंकि पुरातत्व इसलिए भी महत्वपूर्ण साक्ष्य माने जाते हैं क्योंकि इसमें समय के साथ फेर बदल करना उतना आसान नहीं है, जितना अन्य स्रोतों में हो सकता है। अगर हम सिक्कों की बात करें तो पुरातात्विक साक्ष्य में के रूप में सिक्कों का बहुत अहम योगदान होता है जब राज्य के अभिलेखागार के लिए लेखन सामग्री का अभाव था, उस काल के लिए सिक्के और उनके ऊपर अंकित आलेख इतिहास लेखन अहम योगदान निभाते हैं जैसे 206 ईसा पूर्व से 300 ई तक का इतिहास जानने के लिए सिक्कों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है।1 इससे राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक ही नहीं सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों की भी जानकारी प्राप्त होती है। अगर हम सिक्कों के स्वरूप की बात करें तो हम तीन रूप में दिखाई पड़ती हैं जो कहीं न कहीं हमें तात्कालिक परिस्थितियों से रूबरू कराती हैं

1. आलेख (सिक्कों पर उत्कीर्ण लेख)
2. आकृति (सिक्कों पर छपे या अंकित चित्र)
3. लांछन

इनमें आलेख इतिहास लेखन के लिए महत्वपूर्ण साबित होते हैं। हिन्द यवन शासकों एवं मौर्योत्तर गणराज्यों का पूरा इतिहास सिक्कों के आधार पर लिखा गया है।[1] सिक्कों की उपलब्धता, उन पर अंकित आकृति, लेख, बनावट, धातु एवं उसमें अन्य धातुओं का मिश्रण

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

अलग-अलग तथ्यों को उजागर करती है। जैसे एक ही क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में सिक्कों की उपलब्धता से यही अनुमान लगाया जाता है कि यह क्षेत्र उन सिक्कों को जारी करने वाले शासक के साम्राज्य का हिस्सा रहा होगा लेकिन इस तथ्य के महत्वपूर्ण पहलुओं का दूसरा पक्ष भी है, इतिहास में कई बार किन्ही शासकों के द्वारा चलाए गए सिक्के ऐसे स्थलों से प्राप्त होते हैं जिसको आसानी से स्वीकार नहीं किया जा सकता जैसे भरतपुर से प्राप्त गुप्त शासकों की बयाना निधि, धवलेश्वर में प्राप्त चोल सिक्के, ललितादित्य मुक्तपीड के सिक्कों का ढेर उत्तर प्रदेश के बांदा में प्राप्त होना इत्यादि। उपयुक्त तथ्यों का तार्किक विश्लेषण किया जाए तो यह सत्य होता है कि गुप्त शासन काल में पश्चिमी क्षेत्र शकों द्वारा शासित था और वह चांदी के सिक्कों का प्रचलन कर चुके थे, जिस पर सिंह का शिकार करते हुए चंद्रगुप्त द्वितीय बिक्रमादित्य का चित्र अंकित है।

इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकों को पराजित किया था। इसी तरह चोल शासकों के सिक्कों पर सामान्यतः बाघ का अंकन मिलता है, क्योंकि बाघ चोल शासकों का राजकीय चिन्ह था वहीं उनके कुछ सिक्कों पर धनुष और मछली का भी अंकन दिखाई पड़ता है जो क्रमशः चेर और पांडय राजाओं के राजकीय चिन्ह थे। इससे यह पता चलता है कि यह क्षेत्र चोलों ने जीत लिया होगा लेकिन अरिकामेडु से अगर रोमन सिक्के मिलते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि यह क्षेत्र रोमन साम्राज्य के अधीन हैं।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

कल्हण की राजतरंगिणी में यह सूचना प्राप्त होती है कि ललितादित्य ने कन्नौज के शासक यशोवर्मन को पराजित किया था लेकिन यह सत्य नहीं साबित हुआ कि यह क्षेत्र ललितादित्य मुक्त पीठ के अधीन था जबकि उत्तर प्रदेश के बांदा क्षेत्र से ललितादित्य के सिक्के प्राप्त होते हैं। इसी तरह शक शासक चस्टन ने सातवाहन शासक को हराया था, क्योंकि उसके कुछ सिक्कों पर चैत्य अंकित है, जो सातवाहनों का प्रमुख चिन्ह था। इसी तरह की जोगलथंबी से प्राप्त कुछ सिक्के जो नहपान के रजत सिक्के थे जिसको गौतमी पुत्र सातकरणी ने पूनः मुद्रित करवाया था।

इस प्रकार सत्ता के राजनीतिक परिवर्तन को प्रमाणित करने में सिक्कों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है कुषाण शासन वासुदेव द्वितीय को ससानी वंश द्वारा हटा दिया गया था जिसका प्रमाण सासानियन प्रकार के सिक्के हैं।[2] इसी तरह राजनीतिक विस्तार गणराज्य की शासन पद्धति तथा सत्ता की शक्ति का संकेत सिक्कों से प्राप्त होता है जैसे शकों की पहली मुद्रा जिससे यह जानकारी प्राप्त होती है की शक शासक अपने गवर्नर के साथ शासन करते हुए दिखाई पड़ते हैं।

सिक्कों द्वारा समसामयिक आर्थिक स्वरूप को भी निर्धारित किया जा सकता है जिसमें सिक्कों की भूमिका प्राप्त होती है। प्राचीन भारत में साहित्य के साथ-साथ सिक्के भी सामाजिक इतिहास की जानकारी प्रदान करते हैं जैसे भाषा और लिपि की स्वीकार्यता वाले सिक्के जो किसी देव की अनुकृति पर छपवाए गए हैं, जैसे औदुम्बर गणराज्य के सिक्कों पर परसु युक्त त्रिशूल का अंकन किया गया है राजा और जनता का एक साथ उल्लेख इस बात का सूचक है कि इस तरह की किसी भी संप्रदाय को मानने वाला राजा सभी संप्रदायों का सम्मान करता था, जो उनके सिक्कों पर अंकित है।

मुद्रा लेख से धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों की सूचना भी प्राप्त होती है

1. मुद्रालेख के आधार पर ही शासकों की व्यक्तिगत रुचियों का पता चलता है जैसे समुद्रगुप्त का वीणा वादन वाले सिक्के, विक्रमादित्य द्वितीय के अभिनय वाले सिक्के, सिक्कों से किसी शासक की धार्मिक रूचियों का पता चलता है जैसे कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का अंकन तो मिलता,वही गणेश, शिव, नंदी और त्रिशूल का भी अंकल प्राप्त होता है। ऐसे में शासन की

धार्मिक दृष्टिकोण की जानकारी भी प्राप्त होती है। विमकडिफिसस के सिक्कों पर शिव और विष्णु की आकृति का एक साथ अंकन यह दर्शाता है कि उसके अंदर धार्मिक सहिष्णुता की भावना विद्यमान थी जो उसके शासन की आम स्वीकृति के लिए आवश्यक नीति थी।

सिक्कों से ही प्राचीन काल की धार्मिक संप्रदायों की जानकारी प्राप्त किया जैसे चंद्रगुप्त के सिक्कों पर चक्रधारी विष्णु, कुमार गुप्त की मुद्रा पर मयूर पर आसिन कार्तिकेय का अंकन के सिक्के; राजाओं की अश्वमेध यज्ञ करने का साक्ष्य प्राप्त होता है। चोल शासक राज राज के सिक्कों पर कृष्ण की मूर्ति का अंकन धार्मिक सहिष्णुता का प्रमाण है क्योंकि राज राज शैवधर्म के उपासक थे। इसी तरह की धार्मिक सहिष्णुता का साक्ष्य हर्ष के भी एक सिक्के से प्रमाणित होता है जिस पर नंदी पर आसीन शिव पार्वती का अंकन कराया गया है, इसी स्वर्ण सिक्कों पर परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री महाराज हर्षदेव अंकित मिलता है। कालांतर में आने वाले शासक भी विविध जाति, धर्म एवं संप्रदाय के की सहानुभूत प्राप्त करने के लिए न केवल ऐसे प्रतिको, चिन्हों और देवी देवताओं की आकृतियों को अपने सिक्कों पर अंकित करवाते थे जिससे सामंजस्य एवं समरसता की मिशाल उनके साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान कर सके, जैसे अकबर और जहांगीर जैसे मुगल शासकों ने भी भारतीय देवताओं को अपने सिक्कों पर स्थान दिया है। यही नहीं महिलाओं की स्थिति को और मजबूत करने का प्रमाण भी सिक्कों द्वारा प्राप्त होता है जैसे चंद्रगुप्त प्रथम के विवाह प्रकार के सिक्के राजा रानी प्रकार के सिक्के, चालुक्य नरेश के साथ उनकी पत्नी का अंकन, तो मुगल काल में जहांगीर के सिक्कों पर उनके साथ नूरजहां का नाम भी अंकित मिलता है।[3]

पुनः विज्ञान और तकनीकी के क्रमिक विकास के रूप रेखा भी सिक्कों से निर्धारित की जा सकती है जो समय के अनुसार बढ़ती गई जैसे-जैसे छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में आहत सिक्के मिलते हैं, तो तांबे और चांदी के सिक्कों को साहित्य में कर्षापण, पुराण, धारण, सतनाम आदि नाम से जाना जाता है। जो सांचे में ढाले जाते थे। इसी क्रम में सिक्कों का लेख लिखवाना, द्विभाषी एवं द्विलिपि सिक्कों का प्रचलन किया गया[5]

जिसमें लेख के साथ-साथ देवों की आकृति युक्त सिक्के सोने के सिक्के जारी किए गए। यह सिक्के समय काल एवं परिस्थितियों के अनुसार तकनीकी रूप में अधिक स्पष्ट होती जा

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

रही थी जिसे लिपियों का स्पष्ट प्रयोग सिक्कों की आकृति एवं आकार जैसे कुशल मुद्राओं में विविध आलेख एवं आकृतियों का अंतर राज्य के स्थायित्व का सूचक है। सिक्कों के ढालने की कला का तकनीकी विकास गुप्त काल में दिखाई पड़ता है। भारतीय ढंग से आकर्षक सुंदरतम सिक्के गुप्त काल के हैं। इस काल के सिक्कों का आकार और उन मूर्तियों का अंकन अत्यंत संजीव अवकलात्मक है जो पूर्व मध्यकाल तक आते-आते सिक्कों की तकनीकी रूप में काफी परिवर्तन दिखाई पड़ता है जो कालांतर की लिए एक आधार के रूप में काम करता है। आधुनिक भारतीय मुद्रा प्रणाली में चांदी का रुपया आरंभ में शेरशाह ने सर्वप्रथम अपने दिल्ली साम्राज्य 1540 से 45 के लघु शासन काल में चलाया था इसका एक तोला तथा यह इल्तुतमिश के टंके की तुल्य था शेरशाह ने तांबे का सिक्का दाम भी जारी किया जो 330 ग्रेन वजन का होता था। 40 दाम का रुपया होता था। 40 दाम के तांबे का मूल्य लगभग 26 दाम अथवा इसके चालू मूल्य का २/३ भाग होता था।दामों का विभाजन इस प्रकार था

एक अधेला =1/2 दाम	एक पओला=1/4दाम
एक दमडी=1/8 दाम	एक जीतल= 1/25 दाम

40 ढले सिक्कों का वजन 40 * 360.22 ग्रेन अर्थात 122848.8 ग्रेन होता था। तांबे के सिक्के का चालू मूल्य 1 अथवा चांदी का एक तोला था मुद्रित चांदी के 179.6 ग्रेन होता था। अबुल फजल की आईने अकबरी में दाम की सर्वत्र चर्चा है5 देश और प्रांत के राजस्व दाम या रुपए में दिए जाते थे। 17वीं शताब्दी के आरंभ में इसका मूल्य रुपए का 2: 5 भाग होता था। ब्रिटिश समय का पैसा वास्तव में अकबर के समय के दाम के चौथे भाग के बराबर होता था। इसका वजन 78 ग्राम होता था जो अंग्रेज समय में दाम होता था तो दाम के 312 ग्रेन के बराबर होता था।[6]

निष्कर्ष

सिक्के प्राचीन काल से लेकर भारत के आधुनिक पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं जहां अभिलेख, अन्य पुरातात्विक सक्षम नहीं हो पाते हैं वहां सिक्के हमें पद प्रदर्शन के रूप में दिखाई पड़ते हैं कुछ ऐसे भी साक्ष्य हैं जहां अभिलेखित सिक्के ही इतिहास निर्माण मे अहम भूमिका निभाते हुए

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

नजर आते हैं जैसे ही यौधेय या गणराज्य से संबंधित साक्ष्य जिन्हें कभी नकारा नहीं जा सकता है आज भी उसी तरह प्रमाणित है जो प्राचीन काल में प्रमाणित थे। इतिहास लेखन में सिक्कों की भूमिका : एक विश्लेषण इतिहास लेखन में प्रमाण की आवश्यकता होती है और वह प्रमाण साहित्य और पुरातत्व के समान उद्घोष ही प्रदान करते हैं, जिसमें ऐसे पुरावशेष/पुरातत्व जो किसी एक दृष्टिकोण के अलावा विभिन्न दृष्टिकोण समाहित किए होते हैं। उन पुरातत्व में सिक्के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। अर्थात सिक्के ऐसे पुरातात्विक स्रोत है जिनसे इतिहास लेखन के कई पहलुओं का शुक्ष्मावलोकन किया जा सकता है जैसे सिक्कों की बनावट, आकृति, आकर, धातु के प्रकार, उन पर अंकित भाषा एवं संकेत इत्यादि। सभी उस काल के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ राजा की नीतियों को समझने एवं तार्किक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद प्रदान करते हैं। प्राचीन काल से आधुनिक भारत के इतिहास में किसी राज्य/ राष्ट्र की स्थिति का मूल्यांकन मुद्रा के मूल्य से ही किया जाता है। अतः इतिहास के निर्माण में सिक्कों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौबे सौरभ कुमार प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठक संख्याक 76 यूनिवर्सल बुक पब्लिकेशन
2. शर्मा रामशरण प्राचीन भारत पृष्ठ संख्या 114 oxford पब्लिकेशन
3. शर्मा L.P. मध्यतकालीन भारत पृष्ठ संख्या1 313
4. पुन: चौबे सौरभ कुमार प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठख संख्याo 69 यूनिवर्सल बुक पब्लिकेशन प्रयागराज
5. पुन: चौबे सौरभ कुमार प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ संख्या 69 यूनिवर्सल बुक पब्लिकेशन प्रयागराज
6. चोपडा पी. एन., पुरी बी. एन. दास एम. एन. भारत का सामाजिक सांस्कृलतिक और आर्थिक इतिहास पृष्ठण संख्या. 112-113 पब्लिकेशन मैकमिलन